विचार बिन्दु

कार्य ही सफलता की बुनियाद है। –पाब्लो पिकासो

झाला मान सिंह का अमर बलिदान: क्या मेवाड़ अपने सबसे महान स्वामीभक्त को भूल गया?

मेवाड के इतिहास में त्याग और बलिदान की गाथाएं अत्यंत गौरवशाली हैं, जिसमें बप्पा रावल, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप, रानी पद्मिनी और पन्ना धाय जैसे वीरों का योगदान प्रमुख है। परन्तु 18 जून 1576 को हल्दीघाटी की रणभूमि में एक ऐसा बलिदान हुआ, जिसकी मिसाल विश्व इतिहास में भी दुर्लभ है। एक योद्धा ने अपने स्वामी के प्राणों की रक्षा के लिए स्वयं मृत्यु को गले लगा लिया। उसने न राज्य माँगा, न यश, न पुरस्कार। उसने केवल अपना कर्तव्य निभाया और अपना शीश मातृभूमि तथा स्वामी के चरणों में अर्पित कर दिया। वह योद्धा था–बडी सादडी का राजराणा झाला मान सिंह (झाला मन्ना)।

आज, लगभग साढे चार शताब्दियों बाद, एक प्रश्न इतिहास के पन्नों से उठकर हमारे सामने खडा है–क्या मेवाड ने अपने इस महानतम स्वामीभक्त के साथ न्याय किया? क्या जिस वीर ने महाराणा प्रताप को बचाकर मेवाड के इतिहास को जीवित रखा, उसे वह सम्मान मिला जिसका वह वास्तविक अधिकारी था?

यदि हल्दीघाटी के युद्ध में झाला मान सिंह अपना बलिदान नहीं देते, तो क्या महाराणा प्रताप जीवित बच पाते? यदि प्रताप जीवित नहीं बचते, तो क्या मेवाड का स्वतंत्रता संठााम आगे बढ पाता? क्या दिवेर की विजय संभव होती? क्या महाराणा प्रताप आज भारतीय स्वाभिमान और स्वतंत्रता के प्रतीक बन पाते?

इन प्रश्नों का उत्तर इतिहास स्वयं देता है।

जब महाराणा प्रताप मुगल सेना से घिर चुके थे और युद्ध का पलडा प्रतिकूल होता जा रहा था, तब झाला मान सिंह ने महाराणा के सिर से राजमुकुट और राजचिह्न उतारकर स्वयं धारण कर लिए। वे जानते थे कि इसका अर्थ है निश्चित मृत्यु। फिर भी वे आगे बढे। मुगल सेना उन्हें ही महाराणा प्रताप समझकर उन पर टूट पडी और वे रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुए। उधर महाराणा प्रताप को सुरक्षित निकलने का अवसर मिल गया।

वास्तव में उस दिन हल्दीघाटी में दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो आदर्शों का अमर जन्म हुआ–एक ओर स्वतंत्रता, स्वाभिमान और संघर्ष के प्रतीक महाराणा प्रताप और दूसरी ओर स्वामिभक्ति, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा के सर्वोच्च प्रतीक झाला मान सिंह।

दुर्भाग्य यह है कि इतिहास ने एक को शिखर पर स्थापित कर दिया और दूसरे को धीरे–धीरे हाशिए पर धकेल दिया।

आज देश का बच्चा–बच्चा चेतक का नाम जानता है। महाराणा प्रताप पर असंख्य पुस्तकें लिखी गईं, स्मारक बने, डाक टिकट जारी हुए, विश्वविद्यालयों और संस्थानों का नामकरण हुआ। यह सब होना भी चाहिए, क्योंकि प्रताप राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक हैं। लेकिन उसी इतिहास में झाला मान सिंह का नाम प्राय: कुछ पंक्तियों तक सीमित रह गया।

क्या यह न्याय है?

जिस व्यक्ति ने स्वयं को मृत्यु के मुख में झोंककर प्रताप को बचाया, उसका नाम विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों में प्रमुखता से क्यों नहीं है? उसके जीवन और बलिदान पर राष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त शोध क्यों नहीं हुआ? उसके नाम पर बडे स्मारक, संग्रहालय और अध्ययन केंद्र क्यों नहीं स्थापित किए गए? क्यों उसकी गाथा आज भी राजस्थान के सीमित भूभाग तक ही सिमटी हुई है?

जब सरकारी और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा अपेक्षित स्तर पर स्मरण नहीं किया गया, तब समाज ने स्वयं आगे बढ़कर इस अमर बलिदानी की स्मृति को जीवित रखने का दायित्व निभाया है। बड़ी सादड़ी जैन मित्र मंडल का यह प्रयास इस बात का प्रमाण है कि झाला मान सिंह का बलिदान आज भी जनमानस में जीवित है और समाज का एक वर्ग उन्हें वह सम्मान दिलाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है, जिसके वे वास्तविक अधिकारी हैं।

और सबसे बडा प्रश्न–क्या मेवाड के शासक वंश तथा उनके उत्तराधिकारियों ने अपने इस महान स्वामीभक्त की स्मृति को उतनी ही श्रद्धा और गंभीरता से संरक्षित किया, जितनी श्रद्धा वह अपेक्षित करता था?

इतिहास केवल राजाओं का नहीं होता। इतिहास उन लोगों का भी होता है जिन्होंने राजाओं को इतिहास बनने का अवसर दिया। यदि महाराणा प्रताप संघर्ष के नायक थे, तो झाला मान सिंह उस संघर्ष के सबसे बडे सहायक, संरक्षक और रक्षक थे। एक ने स्वतंत्रता की मशाल थामी, तो दूसरे ने अपने प्राण देकर उस मशाल को बुझने से बचाया।

विडम्बना यह है कि आज हल्दीघाटी का नाम सुनते ही प्रताप और चेतक की छवि सामने आती है, लेकिन झाला मन्ना की स्मृति बहुत पीछे छूट जाती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो इतिहास ने उनके बलिदान को स्वीकार तो किया, किन्तु उसे वह स्थान नहीं दिया जिसका वह अधिकारी था।

यह लेख किसी व्यक्ति, परिवार या संस्था की आलोचना के लिए नहीं, बल्कि इतिहास के एक अधूरे ऋण की याद दिलाने के लिए लिखा जा रहा है। राष्ट्र उन लोगों का सदैव ऋणी रहता है जिन्होंने अपने स्वार्थों का त्याग कर उसके गौरव और अस्तित्व की रक्षा की। यदि हम ऐसे बलिदानियों को विस्मृत कर देते हैं, तो हम अपनी ऐतिहासिक चेतना का एक महत्वपूर्ण भाग खो देते हैं।

समाज निभा रहा है स्मृति संरक्षण का दायित्व

जहाँ संस्थागत स्तर पर झाला मान सिंह के बलिदान को अपेक्षित राष्ट्रीय पहचान नहीं मिल पाई, वहीं समाज के कुछ जागरूक वर्ग उनकी स्मृति को जीवित रखने का उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। विशेष रूप सेबड़ी सादड़ी जैन मित्र मंडल के सैकड़ों सदस्य पिछले लगभग दो दशकों से प्रतिवर्ष 18 जून को उदयपुर स्थित मोती मंगरी के महाराणा प्रताप स्मारक परिसर में स्थापित झाला मान सिंह की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करते आ रहे हैं।

इस अवसर पर संगोष्ठियों, विचार गोष्ठियों तथा ऐतिहासिक परिचर्चाओं का आयोजन किया जाता है, जिनमें झाला मान सिंह के अद्वितीय बलिदान, स्वामिभक्ति और राष्ट्रनिष्ठा पर विस्तार से चर्चा होती है। यह अभियान केवल एक श्रद्धांजलि कार्यक्रम नहीं, बल्कि इतिहास के एक उपेक्षित नायक को उसका उचित स्थान दिलाने का सतत सामाजिक प्रयास है।

जब सरकारी और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा अपेक्षित स्तर पर स्मरण नहीं किया गया, तब समाज ने स्वयं आगे बढ़कर इस अमर बलिदानी की स्मृति को जीवित रखने का दायित्व निभाया है। बड़ी सादड़ी जैन मित्र मंडल का यह प्रयास इस बात का प्रमाण है कि झाला मान सिंह का बलिदान आज भी जनमानस में जीवित है और समाज का एक वर्ग उन्हें वह सम्मान दिलाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है, जिसके वे वास्तविक अधिकारी हैं।

समय की मांग

आज आवश्यकता है कि झाला मान सिंह के बलिदान को राष्ट्रीय स्तर पर पुन: प्रतिष्ठित किया जाए। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में उनके योगदान को उचित स्थान मिले। हल्दीघाटी और बड़ी सादड़ी में उनके नाम पर भव्य स्मारक, शोध केंद्र और संग्रहालय स्थापित किए जाएँ। उनके जीवन और बलिदान पर वृत्तिचत्र, शोध ग्रंथ और साहित्यिक कृतियों को प्रोत्साहित किया जाए।

18 जून केवल हल्दीघाटी युद्ध की स्मृति का दिन नहीं है; यह उस दिन की स्मृति भी है जब एक राजपूत योद्धा ने अपने स्वामी को बचाने के लिए स्वयं मृत्यु का वरण किया था। यह दिन जितना महाराणा प्रताप का है, उतना ही श्रद्धा और सम्मान के साथ झाला मान सिंह का भी है।

इतिहास का न्याय तभी पूर्ण होगा जब हल्दीघाटी का स्मरण करते समय हम यह स्वीकार करेंगे कि महाराणा प्रताप की अमर गाथा के पीछे एक और अमर नाम खडा है–झाला मान सिंह।

जिस वीर ने अपने स्वामी का मुकुट अपने सिर पर रखकर मृत्यु को स्वीकार किया, वह केवल मेवाड का नहीं, सम्पूर्ण भारत का गौरव है। जब तक उसके बलिदान को राष्ट्रीय स्मृति में वह स्थान नहीं मिलेगा जिसका वह अधिकारी है, तब तक इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय अधूरा ही रहेगा।

–अतिथि सम्पादक,
डा. पी. सी. कंठालिया,
पूर्व प्रोफेसर एवं मुख्य मृदा वैज्ञानिक,
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

डिजिटल दुनिया में फेक एस्ट्रोलॉजर, फेक काउंसलर, फेक एडवाइजर

सब कुछ फेक, कितना हकीकत, कितनी धोखाधड़ी!

सुनील दत्त गोयल

जब से डिजिटल दुनिया और ई–कॉमर्स व्यापार का विस्तार हुआ है, भारत में धोखाधड़ी की असीमित संभावनाएं बढ़ गई हैं और बन भी गई हैं। बहुत लोगों को ई–कॉमर्स पर दिनभर शॉपिंग करने का नशा चढ़ गया है। इस बहाव में ये बड़ी ई–कॉमर्स कंपनियां न अपने सप्लायर को आइडेंटिफाई करती हैं, न रिकॉग्नाइज। इन पर कोई भी ऑनलाइन रजिस्टर कर ले, और माल बेचने का कॉन्ट्रैक्ट साइन हो जाएगा। इन कंपनियों को कोई मतलब नहीं है कि जो एम्पैनल दुकानदार है, वह प्रोड्यूसर है, मैन्युफैक्चरर है, एक्सपोर्टर है, वह सामान डिलीवरी टाइम पर देगा या नहीं देगा, सामान खराब हुआ तो वापस होगा या नहीं होगा, नहीं करेगा तो कस्टमर को पैसा कैसे मिलेगा।

मेरा स्वयं का भी अमेज़न से एक्सपीरियंस है कि आज से 3 साल पहले जो सामान रिटर्न मैंने किया, उसका पैसा आज तक नहीं आया। थर्ड क्लास क्वालिटी का सामान मुझे मिला। सामान वापस करने में बड़ी मुश्किल हुई और उसका आज तक पैसा नहीं मिला। अमेज़न में सुनने वाला कोई नहीं है। इस बात के सबूत मेरे पास हैं। मेरे जैसे हजारों–लाखों लोग होंगे जो इस तरह की व्यवस्था और धोखाधड़ी के शिकार होते हैं।

यही हालत जितनी भी फूड एग्रीगेटर कंपनियां हैं, उनके साथ है कि घर के कमरे में दो लोग मिलकर जिस भी क्वालिटी का खाना बना रहे हैं, वह खाना बिक जाता है। इएंईं का लाइसेंस, फूड लाइसेंस हिंदुस्तान में किस तरह मिलता है, उसके लिए कोई लिखने की जरूरत ही नहीं है। पैसा दो और जो मर्जी लाइसेंस ले लो, मिल जाता है। खाना बनाने वाला भी जानता है कि वह जो बना रहा है, वह उच्च गुणवत्ता का नहीं है और अगर उसको अपने बच्चों को खाना खिलाना पड़े तो नहीं खिलाएगा। लेकिन उसे अनैतिक सोच से पैसा कमाना जरूरी लगता है क्योंकि उसके खर्च बढ़ चुके हैं और उसे धोखाधड़ी करने में कोई शर्म महसूस नहीं होती। वह जानता है कि वह छोटे स्तर की धोखाधड़ी कर रहा है जो बड़े स्तर पर हो रही है। धोखा खाने वाला व्यक्ति कोई कानूनी कार्रवाई नहीं करेगा क्योंकि उसे पहले वकीलों से दो–चार होना पड़ेगा और कोर्ट या पुलिस के चक्कर काटने पड़ेंगे, तब उसके मुकदमे का निस्तारण होगा या नहीं होगा, भगवान जाने। पुलिस थाने से मदद मिल जाएगी, यह संभावना आम आदमी के लिए आज भी दुश्वार है। 200 साल पहले भी यही हालात थे और आज भी स्थिति वैसी ही है, बल्कि और बिगड़ी हुई है। कुछ सुधार की उम्मीदें भी नहीं हैं।

चाहे न्यायिक प्रक्रिया हो, पुलिस प्रशासन हो या सामान्य प्रशासन – यह आम आदमी के लिए भारत में बने ही नहीं हैं। यह खास लोगों को प्रोटेक्शन देने के लिए बनाए गए हैं, ऐसी आम धारणा लोगों में है। आम जन में इन संस्थाओं का विश्वास न के बराबर है। जिस भी व्यक्ति का उसके पक्ष में फैसला हो जाता है, वह बढ़–चढ़कर इन संस्थाओं के गुणगान करता है और बेचारा पीड़ित व्यक्ति तो क्या ही बोलेगा, वह तो चोट खाकर चुपचाप पड़ा रहता है। आज कम समय में ज्यादा पैसा कमाने की ललक लोगों में पैदा हो गई है। गांव, गली, मोहल्ले की महिलाओं तक, रील बनाना, अश्लील, आपत्तिजनक, द्विअर्थी शब्दों का उपयोग करना और अंग प्रदर्शन से पैसा कमाने की चाहत रखना बहुत आम बात हो गई है। अगर पैसा नहीं मिलता है तो डिप्रेशन में चले जाना भी आम हो गया है। अभी पिछले हफ्ते ही समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ था कि राजस्थान की एक महिला ने सोशल मीडिया पर लगातार ट्रोल किए जाने के कारण आत्महत्या कर ली।

कुछ वर्षों पहले टीवी पर एकता कपूर के सीरियल्स का लगातार बोलबाला था, जिनमें अक्सर एक पुरुष के कई महिलाओं से संबंध या एक महिला के कई पुरुषों से संबंध जैसी कहानियां दिखाई जाती थीं। यह केवल मनोरंजन नहीं था, बल्कि समाज की मानसिक कुंठाओं और असुरक्षाओं को बेहद चालाकी से प्रस्तुत करने का तरीका था। इन धारावाहिकों ने धीरे–धीरे लोगों के मन में शक, असुरक्षा और अविश्वास का बीज बो दिया। हालत यह हो गई कि पति–पत्नी पर शक करने लगे और पत्नी पति पर। आज जो नया दौर टीवी और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर चल रहा है, वह उससे भी ज्यादा खतरनाक है, क्योंकि लगातार दिखाई जाने वाली सामग्री इंसान के सोचने–समझने की क्षमता को प्रभावित कर रही है। धीरे–धीरे दर्शकों का दिमाग जैसे गिरवी रखा जा रहा है और उन्हें उसी दिशा में सोचने के लिए मानसिक रूप से प्रशिक्षित किया जा रहा है, जैसे किसी व्यक्ति को सम्मोहित किया जाता है।

ऐसे ही हर व्यक्ति यह जानने को उत्सुक हो चुका है कि उसका भविष्य कैसा होगा। जिस चीज की डिमांड होती है, उसी तरह के लोग या उत्पाद बाजार में उपलब्ध हो जाते हैं, तो फिर फेक एस्ट्रोलॉजर, काउंसलर, एडवाइजर भी पैदा हो गए। हमें कैसा खाना चाहिए – दिखने में सुंदर हो, ज़ुबान पर स्वाद हो – तो उसी हिसाब से बाजारों में नकली खाद्य पदार्थ बनने लग गए। आज हालात ये हैं कि देसी घी की मिठाइयां, सर्दी में जमती नहीं हैं और गर्मी में पिघलती नहीं हैं। अगर आप रसगुल्ले की बात करें तो ऐसे भुरभुरे बनने लग गए जैसे बुरादे की तरह बिखर जाते हैं। चाशनी के नाम पर उसमें पानी डाला जाने लगा। क्योंकि ग्राहक को कम मीठा चाहिए। अब तो हालत ये हैं कि आम या नींबू का अचार बहुत ज्यादा खट्टा नहीं हो। यह जो हमारी अपेक्षाएं हैं, यही से बाजार में दुकानदारों को हमारी इच्छा के अनुरूप सामान बनाकर बेचना मजबूरी बन जाता है। और वहीं से शुरू होता है नकली सामान का गोरखधंधा।

उसका असर यह है कि आज हर अखबार विज्ञापनों से भरा हुआ है, हर बड़े अस्पताल में कैंसर सेंटर खुल रहे हैं और कैंसर तेजी से बढ़ता बाजार बन चुका है। हाई ब्लड प्रेशर और डायबिटीज के बाद अब कैंसर इस देश का सबसे बड़ा रोग बनता जा रहा है।

योग्य डॉक्टरों का अभाव है, नई जनरेशन डॉक्टर बनना नहीं चाहती और बने तो बहुत सारी विकट समस्याओं का सामना करना पड़ता है – लंबा कोर्स, लंबी समस्याएं। इसके बारे में पहले भी एक आर्टिकल, जिसका शीर्षक दिया था – चिकित्सक: वर्षों की तपस्या, भारी निवेश और समाज की विडम्बना।

तो इस आभासी दुनिया में सबसे बड़ा आराम है कि आपको कहीं जाना नहीं है, कुछ नहीं करना है। एक कमरे में बैठो, लैपटॉप न भी हो तो मोबाइल पर सारे ऐप मौजूद हैं। सारे अच्छे और बुरे कर्म करने के लिए उसके अंदर परमिशन मौजूद है। यह बिलकुल वैसे ही है जैसे छुरी से सब्ज़ी भी काट सकते हैं और किसी की जान भी ले सकते हैं और आग से रोटी भी पका सकते हैं और किसी का घर भी जला सकते हैं। वैसे ही आधुनिक डिजिटल संसाधनों का उपयोग या दुरूपयोग करना आप पर निर्भर है।

आज हमारे जो नैतिक मूल्य हैं, उनका इतना ह्रास हो चुका है, इतना पतन हो चुका है कि हम चंद रुपयों के लालच में किसी को कितना बड़ा नुकसान हो, उसको करने में नहीं हिचकते। यही वजह है कि डिजिटल दुनिया आज आपकी डिमांड पर हर चीज के लिए खड़ी हुई है। आप जो चाहोगे, मिल जाएगा। यदि आप चाहो कि आपको यह आभास हो कि अमावस्या की रात्रि 12:00 बजे आपको दिन का उजाला नजर आए, तो आप ऑनलाइन सर्च मारिए, ऐसे हजारों लोग मिल जाएंगे जो आपकी यह तमन्ना पूरी करने के लिए तैयार बैठे हुए हैं। अब कोई भी सोच सकता है कि यह चीज संभव है? लेकिन क्योंकि आपकी डिमांड है, वह सामान ऑनलाइन भरा हुआ है। अब तो डिस्क्लेमर लगाना भी शुरू कर दिया है कि जो भी सूचना हम दे रहे हैं, उसकी सत्यता की हमारी कोई गारंटी नहीं है। यानी उनके पास जैसा डेटा हजारों लोगों ने भर दिया, उसी में से टॉप रैंकिंग को सॉर्ट आउट करके वह आपके सामने प्रस्तुत कर देता है, बिना यह सोचे कि उसकी सत्यता क्या होगी।

तो मेरा सभी लोगों से अनुरोध है कि डिजिटल और आभासी दुनिया से दूर रहें और अपने घर परिवार, पास–पड़ोस, अपने दोस्त और रिश्तेदारों से संपर्क बढ़ाएं। उनसे मिलना–जुलना बरकरार रखें और जीवन को आज से 30 साल पहले कैसे जिया जाता था, उस तरह जिएँ। यह मोबाइल, यह सोशल मीडिया आपका भला करने वाला नहीं है।

अभी भी प्रिंट मीडिया में जिम्मेदारी का भाव मौजूद है कि वह लिखने से पहले कई बार सोचते हैं और 60–70 प्रतिशत सूचनाएं और जानकारी आज भी उनमें तथ्यपूर्ण तरीके से दी जाती हैं। बाकी उनको भी अखबार चलाना है, तो कई बार बहुत सारी सूचनाएं ऐसी होती हैं जो समाज के दोहन के रूप में पेश की जाती हैं। मैं माफी चाहता हूं क्योंकि उनकी भी अपनी मजबूरियां हैं। लोग अखबार में भी वही पढ़ना चाहते हैं जो उनको पसंद हो, तो प्रकाशक मजबूरी में इस तरह की सूचनाएं भी थोड़ी–बहुत डालते हैं।

इसलिए अपने लोगों से मिलते–जुलते रहिए, आभासी दुनिया से बाहर निकलिए। नहीं तो आने वाला समय ऐसा होगा जैसे पूरे देश में नशा मुक्ति केंद्र खुले हुए हैं और पिछले 20 से 30 साल से चल रहे हैं, वैसे ही डिजिटल मुक्ति केंद्र भी बहुत तेजी से खुलेंगे। और वह भी ऐसे लोग खोलेंगे जो डिजिटल दुनिया में ही उसका प्रचार–प्रसार करेंगे। यानी आप डिजिटल दुनिया में ही फंसे रहेंगे उनको ढूंढने के लिए, और डिजिटल माध्यम से ही उनसे ऑनलाइन काउंसलिंग लेंगे और डिजिटल माध्यम से ही डिटॉक्स करने का ट्रीटमेंट लेंगे और अंतत: आप डिजिटल दुनिया के जाल में ही उलझकर रह जाएंगे। इससे बाहर निकलने का मार्ग भी आपके अपने हाथ में है। केवल आत्मसंयम, अनुशासन और दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर ही आप इस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। यह आपके अपने लिए सोचने का विषय है। मेरी बातें आपको अब नहीं तो शायद कुछ वर्षों बाद याद अवश्य आयेंगी।

रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री।

जोधपुर रेल मंडल में इलेक्ट्रिक इंजन से दौड़ती ट्रेनों ने बदली तस्वीर

उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल ने पिछले दो वर्षों में लगभग 2.84 करोड़ लीटर डीजल की बचत की

जोधपुर, (कासं)। उत्तर–पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल में ट्रेनों के बढ़ते विद्युतीकरण और इलेक्ट्रिक इंजनों से संचालन का असर अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन को तेजी से अपनाने के चलते मंडल ने पिछले दो वर्षों में लगभग 2.84 करोड़ लीटर डीजल की बचत कर उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। वर्तमान में मंडल की करीब 75 प्रतिशत ट्रेनों का संचालन इलेक्ट्रिक इंजनों से किया जा रहा है, जिससे डीजल पर निर्भरता लगातार कम हो रही है।

■ 'जैसे-जैसे ट्रेनों का संचालन इलेक्ट्रिक इंजनों से बढ़ रहा है, रेलवे की महंगे डीजल पर निर्भरता तेजी से घट रही है विद्युतीकरण के सकारात्मक परिणाम अब ईंधन खपत के आंकड़ों में भी दिखाई देने लगे हैं'

उत्तर–पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल रेल प्रबंधक अनुराग त्रिपाठी ने बताया कि जैसे–जैसे ट्रेनों का संचालन इलेक्ट्रिक इंजनों से बढ़ रहा है, रेलवे की महंगे डीजल पर निर्भरता तेजी से घट रही है। उन्होंने कहा कि विद्युतीकरण के सकारात्मक परिणाम अब ईंधन खपत के आंकड़ों में भी दिखाई देने लगे हैं।

मंडल के आंकड़ों के अनुसार,वर्ष 2024–25 में ट्रेन संचालन के लिए डीजल की खपत लगभग 6 करोड़ 77 लाख 78 हजार 865 लीटर रही थी, जबकि वर्ष 2025–26 में यह घटकर करीब 3 करोड़ 94 लाख 13 हजार 815 लीटर रह गई। इस प्रकार दो वर्षों में मंडल ने लगभग 2 करोड़ 83 लाख 65 हजार 50 लीटर डीजल की बचत दर्ज की। रेल प्रशासन के अनुसार जोधपुर मंडल के अधिकांश रेल खंडों पर विद्युतीकरण कार्य पूरा किया जा चुका है। अब लोको उपलब्धता के अनुसार ट्रेनों का ट्रैक्शन बदला जा रहा है तथा आने वाले समय में मंडल को डीजल आधारित संचालन से लगभग पूरी तरह मुक्त करने का लक्ष्य रखा गया है।

दो बाल श्रमिक मुक्त कराये

जोधपुर, (कासं)। कमिश्नरेट के जिला पश्चिम में दो बाल श्रमिकों को बालश्रम से मुक्त करवा चाइल्ड हैल्पलाइन के सुपुर्द किया गया। बाद में बालकों को सुधार गृह भिजवाया गया।

प्रतापनगर सदर पुलिस थाने के एसआई देवाराम ने न्यू कोहिनूर सिनेमा प्रतापनगर स्थित जावेद ऑटो डेटिंग–वैल्लिंडग रिपेयर सेंटर पर रेड देकर एक बालक श्रमिक को मुक्त करवाया। यहां बालक से वाहनों के कलपुर्जों की साफ–सफाई का कार्य कराया जा रहा था। दुकानदार जावेद के खिलाफ जेजे एक्ट में प्रकरण दर्ज किया गया। इसी तरह भगत की कोठी थाने के एसआई पदमा ने बासनी सरस्वती नगर में एक फर्म में बालक से श्रम कराने वाले मनोज के खिलाफ जेजे एक्ट में कार्रवाई की गई। पुलिस ने दोनों बालकों को बाद में चाइल्ड हैल्पलाइन के सुपुर्द किया। बाद में उन्हें सुधार गृह भिजवाया गया।

राजस्व गांव खींचन विस्तार के गठन को चुनौती देने वाली याचिका हाई कोर्ट ने खारिज की

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट के जस्टिस संजीत पुरोहित की बेंच ने फलोदी जिले में नए राजस्व गांव खींचन विस्तार के गठन को चुनौती देने वाली याचिका को खारिज कर दिया। कोर्ट ने माना कि राज्य सरकार ने गांव के गठन की प्रक्रिया तय नियमों के अनुसार पूरी की और प्रशासनिक जरूरतों को देखते हुए लिया गया निर्णय कानून सम्मत है।

■ कोर्ट ने माना कि राज्य सरकार ने गांव के गठन की प्रक्रिया तय नियमों के अनुसार पूरी की और प्रशासनिक जरूरतों को देखते हुए लिया गया निर्णय कानून सम्मत है

खींचन निवासी सत्यनारायण सिंह राजपुरोहित ने हाईकोर्ट में याचिका दायर कर राजस्व विभाग की 13 दिसंबर 2025 की अधिसूचना को चुनौती दी थी। याचिकाकर्ता का तर्क था कि खींचन विस्तार गांव का गठन निर्धारित मापदंडों के अनुरूप नहीं है और पहले की प्रक्रिया में इसे रद्द किया जा चुका था, इसलिए दोबारा अधिसूचना जारी करना गलत है। राज्य सरकार की ओर से बताया गया कि नए गांव के गठन से पहले अधिकारियों ने मौके का निरीक्षण कर रिपोर्ट तैयार की थी। रिपोर्ट में सामने आया कि खींचन और खींचन विस्तार के बीच दूरी निर्धारित मानकों के अनुसार है। अलग–अलग रास्तों से दोनों गांवों के केंद्र बिंदुओं की दूरी 1 किलोमीटर से अधिक पाई गई।

हाईकोर्ट ने कहा कि केवल कुछ खसरों के आपस में जुड़े होने के आधार पर गांव गठन को गलत नहीं माना जा सकता। नए गांव बनाने के लिए दूरी, प्रशासनिक सुविधा, विकास की संभावना और स्थानीय जरूरतों जैसे पहलुओं को ध्यान में रखा जाता है। याचिकाकर्ता की ओर से राजनीतिक दबाव में अधिसूचना जारी होने का आरोप भी लगाया गया था। इस पर कोर्ट ने कहा कि किसी जनप्रतिनिधि द्वारा मांग या सुझाव दिए जाने मात्र से प्रशासनिक फैसला अवैध नहीं हो जाता। इसके लिए ठोस दुर्भावना या नियमों के उल्लंघन के प्रमाण जरूरी हैं। कोर्ट ने राजस्थान भू–राजस्व अधिनियम के प्रावधानों का उल्लेख करते हुए कहा कि गांवों के गठन और सीमाओं में बदलाव का अधिकार राज्य सरकार के पास है। पर्याप्त आधार नहीं मिलने पर हाईकोर्ट ने याचिका खारिज कर दी और खींचन विस्तार गांव के गठन को बरकरार रखा।

राशिफल

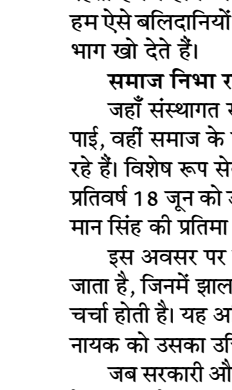

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 13 जून, 2026

द्वितीय ज्येष्ठ मास (अधिक), कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2083, कृत्तिका नक्षत्र रात्रि 1:17 तक, सुकर्मा योग सायं 5:28 तक, गर करण प्रात: 5:52 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 9:25 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृष, चन्द्रमा–मेष, मंगल–मेष, बुध–मिथुन, गुरू–कर्क, शुक्र–कर्क शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि योग रात 1:17 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा सायं 4:08 से रात्रि 2:14 तक है। आज मास शिवरात्रि है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:19 से 9:02 तक, चर 12:27 से 2:09 तक, लाभ अमृत 2:09 से 5:34 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:17

मेष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। धन हानि का भय बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

कन्या

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृश्चिक

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु

स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मकर

परिवार में शुभ–मांगलिक एवं धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुविधाएं बढ़ेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित योजना बनेगी।